"उपदेस गुर पूरे का"

• पूरा प्रभ आराधिआ पूरा जा का नाउ । नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ।1। असटपदी।

अर्थः- जिस मनुष्य ने अटल नाम वाले पूरन प्रभु को स्मरण किया है, उसे वह पूरन प्रभु मिल गया है इस वास्ते हे नानक ! तू भी पूरन प्रभु के गुण गा ।

• पूरे गुर का सुनि उपदेस । पारब्रहम निकटि करि पेख । सासि सासि सिमरहु गोबिंद । मन अंतर की उतरै चिंद ।

अर्थः- हे मन ! पूरे सतिगुरु की शिक्षा सुन और अकाल - पुरख को हर जगह नजदीक जान के देख । हे भाई ! हर दम प्रभु को याद कर ताकि तेरे मन के अंदर की चिन्ता मिट जाए ।

आस अनित तिआगहु तरंग । संत जना की धूरि मनमंग ।
आप छोडि बेनती करहु । साध संग अगनि सागर तरहु ।

अर्थः- हे मन ! नित्य ना रहने वाली चीजों की आशाओं की लहरें त्याग दे, और संत जनों के पैरों की ख़ाक मांग ।

हरिधन के भरि लेहु भंडार । नानक गुर पूरे नमसकार ।1।

अर्थः- हे भाई ! स्वैभाव छोड़ के प्रभु के आगे अरदास कर और इस तरह साधसंगति में रह के विकारों की आग के समुंदर से पार लांघ। हे नानक ! प्रभु नाम रूपी धन के खजाने भर ले और पूरे सतिगुरु को नमस्कार कर ।

• उतम सलोक साध के बचन । अमुलीक लाल एहि रतन ।
सुनत कमावत होत उधार । आपि तरै लोकह निसतार ।

अर्थः- साधु गुरु के वचन सबसे अच्छी महिमा की वाणी है, ये अमूल्य लाल हैं, अमोलक रत्न हैं । इन वचनों को सुनने से और कमाने से बेड़ा पार होता है, जो कमाता है वह स्वयं तैरता है और लोगों का भी निस्तारा करता है ।

सफल जीवन सफल ता का संग । जा कै मनि लागा हरि रंग । जै जै सबद अनाहद वाजै । सुनि सुनि अनद करे प्रभ गाजै ।

अर्थः- जिस मनुष्य के मन में प्रभु के लिए प्यार बन जाता है, उसकी जिंदगी पूरी मुरादों वाली होती है उसकी संगति औरों की भी मुरादें पूरी करती है ।

प्रगटे गुपाल महांत के माथे । नानक उधरे तिन के साथे ।3।

अर्थः- उसके अंदर जै - जैकार की गूँज हमेशा चलती रहती है जिसे सुन के भाव महसूस करके वह खुश होता है क्योंकि प्रभु उसके अंदर अपना नूर रौशन करता है । गोपाल, प्रभु की ऊँची करणी वाले बंदे के माथे पर प्रगट होते हैं, हे नानक ! ऐसे मनुष्य के साथ और कई मनुष्यों का बेड़ा पार होता है ।

• खेम साति रिधि नव निधि । बुध गिआन सरब तह सिध। बिदिआ तप जोग प्रभ धिआन। गिआन स्रेसट ऊतम इसनान ।

अर्थः- अटल सुख मन का टिकाव रिद्धियां और नौ खजाने अक्ल ज्ञान और सारी ही करामातें उस मनुष्य में आ जाती हैं । विद्या,तप,जोग अकाल पुरख का ध्यान श्रेष्ठ ज्ञान बढ़िया से बढ़िया भाव तीर्थों का स्नान ।

चारि पदारथ कमल प्रगास । सभ के मधि सगल ते उदास । सुंदर चतुर तत का बेता । समदरसी एक द्रिसटेता ।

अर्थः- धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पदार्थ हृदय कमल का खिलना सभी में रहते हुए भी सभी से उपराम रहना सुंदर, समझदार जगत के मूल तत्व को जानने वाला सब को ऐक जैसा जानना और सब को एक नजर से देखना

इह फल तिस जन के मुखि भने । गुर नानक नाम बचन मनि सुने ।

अर्थः- ये सारे फल हे नानक ! उस मनुष्य के अंदर आ बसते हैं जो गुरु के शब्द और प्रभु का नाम मुँह से उचारता है और मन लगा के सुनता है ।

इहु निधान जपै मनि कोई । सभ जुग महि ता की गति होई । गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी । सिमृत सासत्र बेद बखाणी ।

अर्थः- जो भी मनुष्य इस नाम को जो गुणों का खजाना है, जपता है, सारी उम्र उसकी उच्च आत्मिक अवस्था बनी रहती है । उस मनुष्य के साधारण वचन भी गोबिंद के गुण और नाम की लहर के ही होते हैं, स्मृतियों, शास्त्रों और वेदों ने भी यही बात कही है ।

सगल मतांत केवल हरि नाम । गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम । कोटि अप्राध साध संग मिटै । संत कृपा ते जम ते छुटै ।

अर्थः- सारे मतों का निचोड़ प्रभु का नाम ही है, इस नाम का निवास प्रभु के भक्त के मन में होता है । जो मनुष्य नाम जपता है उस के करोड़ों पाप सत्संग में रह के मिट जाते हैं, गुरु की कृपा से वह मनुष्य जमों से बच जाता है ।

जा कै मसतकि करम प्रभि पाऐ । साध सरण नानक ते आए ।7।

अर्थः- पर हे नानक ! जिस के माथे पर प्रभु ने नाम की बख्शिश के लेख लिख धरे हैं, वह मनुष्य गुरु की शरण आते हैं ।

• जिस मनि बसै सुनै लाइ प्रीत । तिस जन आवै हरि प्रभ चीत । जनम मरन ता का दूख निवारै । दुलभ देह ततकाल उधारै ।

अर्थः- जिस मनुष्य के मन में नाम बसता है जो प्रीत लगा के नाम सुनता है, उस को प्रभु याद आता है उस मनुष्य के पैदा होने मरने के कष्ट काटे जाते हैं, वह इस दुर्लभ मानव - शरीर को उसी वक्त विकारों से बचा लेता है ।

निरमल सोभा अंमृत ताकी बानी । एक नाम मन माहि समानी । दूख रोग बिनसे भै भरम । साध नाम निरमल ता के करम ।

अर्थः- उसकी बेदाग शोभा और उसकी बाणी नाम अमृत से भरपूर होती है । क्योंकि उसके मन में प्रभू का नाम ही बसा रहता है । दुख, रोग, डर और वहम उसके नाश हो जाते हैं । उसका नाम 'साधु' पड़ जाता है और उसके काम विकारों की मैल से साफ होते हैं ।

सभ ते ऊच ता की सोभा बनी। नानक इह गुण नाम सुखमनी ।8।24। (5-295-296)

अर्थः- सबसे ऊँची शोभा उसको मिलती है । हे नानक ! इस गुण के कारण प्रभू का नाम सुखों की मणी है भाव सर्वोत्तम सुख है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"